



दी नैक्सट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3

एम्स और बीआरडी में स्वतंत्रता दिवस पर शपथ

5

अपहरण की रची साजिश

8

क्या गाल टेस्ट के तीसरे दिन भी बारिश बनेगी विलेन

UPHIN/2023/90814

वर्ष: 04, अंक: 08

पृष्ठ संख्या: 8

मूल्य: 1.00 रु.

सोमवार 17 अगस्त, 2026

‘अर्बन नक्सल’ के बाद ‘दिमागी नक्सली’ प्रधानमंत्री के लालकिले की प्राचीर से संबोधन के गहरे हैं मायने

लाल किले से PM मोदी का नया मंत्र

‘सप्त धारा’ से 2047 तक भारत बनेगा विकसित राष्ट्र

प्रेरणा का आधार

प्राचीन काल में जिस तरह इन 7 नदियों के प्रवाह ने भारत को समृद्ध, खाद्यान्न-संपन्न, ऊर्जावान और सांस्कृतिक रूप से विश्व गुरु बनाया, ठीक उसी तर्ज पर आज भारत को आधुनिक वैश्विक मंच पर शीर्ष तक पहुंचने के लिए 7 नई ‘शक्ति धाराओं’ के एकीकृत प्रवाह की आवश्यकता है।

‘सप्त धारा’ का नया खाका

PM ने विकसित भारत के निर्माण के लिए मैन्युफैक्चरिंग, कृषि, टेक्नोलॉजी, गति शक्ति, रक्षा, ग्रीन इकोनॉमी और सॉफ्ट पावर को मिलाकर ‘सप्त धारा’ का नया रोडमैप घोषित किया है।

दिल्ली, एजेंसी। वर्ष 2024 के लालकिले संबोधन में उन्होंने स्पष्ट रूप से ‘राष्ट्र प्रथम’ को सर्वोच्च संकल्प बताया और 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक शक्ति से विकसित भारत बनाने का आह्वान किया। वर्ष 2025 के संबोधन में और व्यापक दिखाई दिया। 80वें स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संदेश केवल सुरक्षा का प्रश्न नहीं, अपितु भारत की राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और विकसित भारत के संकल्प से जुड़ा विमर्श है। भारत के राष्ट्र जीवन में कुछ शब्द केवल शब्द नहीं रहते, वे एक व्यापक विचार को जन्म देते हैं। राष्ट्र प्रथम, भारत माता, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव, विकसित भारत और राष्ट्रीय एकता, ऐसे ही शब्द हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लालकिले से दिए गए स्वतंत्रता दिवस के संबोधनों को इसी व्यापक दृष्टि से देखने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री के संबोधनों में पिछले वर्षों में एक बात लगातार दिखाई देती है। भारत को केवल आर्थिक रूप से मजबूत राष्ट्र नहीं, अपितु अपनी सभ्यता, संस्कृति, सुरक्षा और राष्ट्रीय आत्मविश्वास के आधार पर विश्व में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने वाला देश बनाना। वर्ष 2014 में लालकिले से उन्होंने स्वयं को ‘प्रधान सेवक’ बताते हुए राष्ट्र के लिए काम करने का संकल्प रखा था।

साथ ही कहा था कि भारत की नियति विश्व कल्याण की है। समय के साथ इस विचार का विस्तार हुआ। कभी उन्होंने जनभागीदारी को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया, कभी स्वच्छता और जनधन जैसी पहलों को सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा, कभी ‘सबका साथ, सबका विकास’ की बात की और बाद के वर्षों में विकसित भारत 2047 को राष्ट्रीय संकल्प के रूप में सामने रखा। वर्ष 2024 के लालकिले संबोधन में उन्होंने स्पष्ट रूप से ‘राष्ट्र प्रथम’ को सर्वोच्च संकल्प



विकसित भारत बनने की यात्रा में युवाओं की बड़ी भूमिका है- PM मोदी

‘देश संसाधनों की कमी से नहीं, सोच की कमी से थम जाता’- पीएम



बताया और 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक शक्ति से विकसित भारत बनाने का आह्वान किया। वर्ष 2025 के संबोधन में और व्यापक दिखाई दिया। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, तकनीकी क्षमता, नवाचार, युवाशक्ति और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को एक दूसरे से जोड़ते हुए भारत को अपने भविष्य का निर्धारण स्वयं करने वाला राष्ट्र बनाने की बात कही। आज उन्होंने ‘दिमागी नक्सलियों’ का जिक्र किया। इसी संदर्भ में ‘दिमागी नक्सलियों’ की चर्चा को समझना जरूरी है। दरअसल, नक्सलवाद ने दशकों तक भारत के आदिवासी और दूरदराज के क्षेत्रों में हिंसा का वातावरण बनाया। बंदूक, बारूदी सुरंग

और हिंसा के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवस्था को चुनौती देने वाली इस विचारधारा ने सबसे अधिक नुकसान उन्हीं गरीब और आदिवासी परिवारों को पहुंचाया, जिनके अधिकारों और विकास के नाम पर वह संघर्ष का दावा करती रही। वर्ष 2025 के लालकिले संबोधन में प्रधानमंत्री ने नक्सलवाद के खिलाफ सरकार की कार्रवाई और राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में विस्तार से बात की थी। उन्होंने कहा था कि नक्सलवाद से सबसे अधिक नुकसान आदिवासी परिवारों को हुआ है, लेकिन नक्सलवाद का प्रश्न केवल जंगल में मौजूद हथियारबंद दस्तों तक सीमित नहीं है। प्रधानमंत्री ने इससे पहले भी ‘अर्बन नक्सल’ शब्द का इस्तेमाल करते हुए उस वैचारिक नेटवर्क के प्रति सावधान किया है, जिसे वे भारत के विकास और विरासत के विरोध से जोड़ते हैं। मार्च 2025 में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि जंगलों से नक्सलवाद कम होने के बाद शहरी केंद्रों में उसकी वैचारिक मौजूदगी के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और सम्मान समारोह, प्रभारी मंत्री स्वतंत्र देव सिंह रहे मौजूद

गोरखपुर, संवाददाता। ध्वजारोहण के बाद एडी स्कूल की छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उनके गीत और नृत्य पर उपस्थित लोग तालियां बजाते रहे। पूरे परिसर में राष्ट्रभक्ति का माहौल रहा। कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ ही खेल, सेना और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। मंत्री ने कहा कि ऐसे वीरों के बलिदान से ही देश आज आजाद है। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्कृति विभाग और जिला प्रशासन द्वारा



बाबा गंभीर नाथ प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने राष्ट्र ध्वज को सलामी दी और शहीदों को नमन किया। ध्वजारोहण के बाद एडी स्कूल की छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उनके

गीत और नृत्य पर उपस्थित लोग तालियां बजाते रहे। पूरे परिसर में राष्ट्रभक्ति का माहौल रहा। कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ ही खेल, सेना और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। मंत्री ने कहा कि ऐसे वीरों के बलिदान से ही देश आज आजाद है। कार्यक्रम में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह के साथ जिला पंचायत अध्यक्ष साधना सिंह, डीएम दीपक मीणा, एसएसपी डॉ. कौस्तुभ, सीडीओ त्रिपुरारी सारस्वत सहित अन्य प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी मौजूद रहे।

15 अगस्त को बच्चों के साथ राहुल गांधी



15 अगस्त की कुछ झलकियां



चाइनीज मांझे से कटी कारोबारी की गर्दन, 8 टांके लगे

गोरखपुर, संवाददाता। बसंतपुर निवासी सैनिकरी व पाइप फिटिंग के थोक कारोबारी मनोज कुमार बरवाल बाइक से घर लौट रहे थे। इसी बीच चीन के मांझे की चपेट में आ गए। मांझे से उनकी गर्दन कट गई। लहलुहान मनोज ने रुमाल लगाकर गले को बांधा और खुद बाइक चलाते जिला अस्पताल पहुंच गए। हार्बर्ट बंधे पर शनिवार सुबह बाइक से घर लौट रहे कारोबारी मनोज कुमार बरनवाल की गर्दन चीन के मांझे की चपेट में आने से कट गई। घायल अवस्था में वह खुद बाइक चलाकर जिला अस्पताल पहुंचे जहां डॉक्टर ने आठ टांके लगाए। उपचार के बाद उनकी हालत स्थिर बताई गई। परिजन उन्हें लेकर घर चले गए।



दूसरी घटना गोरखनाथ थाने के सामने की है। स्कूटी से जा रहे राजेश मणि भी चीन के मांझे की चपेट में आने के बाद भी बाल-बाल बच गए। राहगीरों ने शोर मचाया तो वह रुक गए। बाद में दो युवतियों ने उनके गले में लिपटे मांझे को हटाया। जानकारी के मुताबिक, बसंतपुर निवासी सैनिकरी व पाइप फिटिंग के थोक कारोबारी मनोज कुमार बरवाल बाइक से घर लौट रहे थे। इसी बीच चीन के मांझे की चपेट में आ गए। मांझे से उनकी गर्दन कट गई। लहलुहान मनोज ने रुमाल लगाकर गले को बांधा और खुद बाइक चलाते जिला अस्पताल पहुंच गए।



यूपी में बदमाशों के आगे कानून के रखवाले भी बेबस! IPS आशुतोष मिश्रा की मां की लूट के बाद हत्या; घर में मिला शव, शरीर से जेवर तक उतार ले गए!



प्रशांत किशोर ने ली शपथ, अब हो गए बांकीपुर के ‘माननीय’

सम्पादकीय

जेन—जी के सपनों को मिले पंख

लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युवा पीढ़ी यानी जेन—जी और जेन—अल्फा से सीधा संवाद किया। सरकार की नीतिगत दिशा स्पष्ट है—देश को डिजिटल, तकनीकी और मैन्यूफैक्चरिंग महाशक्ति बनाना। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मुफ्त ट्रेनिंग, डाटा सेंटर, क्रिटिकल मिनरल्स की खोज और सेमीकंडक्टर चिप प्लांट्स जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में भारी निवेश किया जा रहा है। सरकार का यह दीर्घकालिक सोच ‘विकसित भारत 2047’ के सपनों को पंख लगाने वाला है, लेकिन इस चमकदार तकनीकी भविष्य के सिक्के का एक दूसरा और बेहद स्याह पहलू भी है, जो आज देश की सड़कों पर युवाओं के आक्रोश के रूप में बार—बार दिखाई दे रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर और एआइ हब बनाने के प्रयास ऐतिहासिक हैं। सरकार चिप प्लांट्स और एआइ इकोसिस्टम के लिए लाखों करोड़ रुपये खर्च कर रही है। नीति—निर्माताओं का मानना है कि इन आधुनिक उद्योगों से देश में लाखों ‘हाई—एंड’ नौकरियां पैदा होंगी, लेकिन इस तथ्यात्मक सच से भी मुंह नहीं फेरा जा सकता कि ये उद्योग अत्यधिक पूंजी—गहन हैं, न कि श्रम—गहन। एक सेमीकंडक्टर प्लांट में अरबों रुपये का निवेश होता है, लेकिन वहां प्रत्यक्ष रोजगार कुछ हजार सुपर—स्पेशलाइज्ड इंजीनियरों को ही मिलता है। ऐसे में सवाल उठता है कि देश में सामान्य स्नातक पास फौज का क्या होगा? जो हर साल डिग्री लेकर रोजगार के बाजार की कतार में खड़ी हो रही है। आंकड़ों के आईने में शिक्षित बेरोजगारी का सचरू आर्थिक मोर्चे पर युवाओं की स्थिति को समझने के लिए सरकारी और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के आंकड़े आखें खोलने वाले हैं। इंडिया स्किल्स की एक रिपोर्ट बताती है कि कालेजों से निकलने वाले 50 प्रतिशत से अधिक युवा आज भी उद्योगों की तात्कालिक जरूरतों के हिसाब से रोजगार योग्य नहीं हैं। यानी कहीं न कहीं हमारे शैक्षणिक संस्थानों और वहां की शिक्षा प्रणाली में विसंगतियां हैं।

जेन—जी और जेन—अल्फा युवाओं में बढ़ रहे असंतोष और उनके सड़कों पर उतरने की सबसे बड़ी और तात्कालिक वजह घरों में अभिभावकों के सपनों से जन्म लेने वाली लालसा और इंटरनेट मीडिया की होड़ तो है ही, इसके लिए कहीं न कहीं देश की चरमराई परीक्षा प्रणाली भी बराबर की दोषी है। पेपर लीक जैसी विसंगतियां इन युवाओं की बेचोनी स्वाभाविक रूप से बढ़ाती हैं। एक विश्लेषण के मुताबिक, पिछले पांच वर्षों में देश के 15 से अधिक राज्यों में 40 से ज्यादा बड़ी सरकारी भर्ती परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक हुए हैं।

नीट—यूजी, यूजीसी—नेट और विभिन्न राज्यों की सिपाही एवं प्रशासनिक भर्ती परीक्षाओं में हुई धांधलियों ने देश के लगभग 1.5 करोड़ से अधिक युवाओं को कहीं न कहीं मानसिक तनाव तो दिया ही है, शैक्षणिक प्रणाली के प्रति उनके विश्वास को भी क्षति पहुंचाई है। यदि यह व्यवस्था ठीक होती, तो इस बड़े तबके के बीच असंतोष की चिंगारी इतनी गहरी नहीं होती और इसका लाभ उठाने वाले राजनीतिक दलों को बैठे—बिठाए अवसर नहीं मिलता। पेपर लीक होना, फिर परीक्षा का रद्द होना, अदालती मुकदमेबाजी और दोबारा जांच के इस चक्रव्यूह में युवाओं की उत्पादक उम्र के स्वर्णिम वर्ष व्यर्थ हो रहे हैं।

सरकार ने संसद में ‘सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026’ पारित कर पेपर लीक के खिलाफ पांच करोड़ रुपये तक के जुर्माने और 10 वर्ष तक की जेल का प्रविधान किया है, लेकिन कानून केवल कागजी ढाल नहीं हो सकते, उन्हें जमीन पर बेहद कड़ाई से लागू करना होगा। ‘विकसित भारत’ का जो रास्ता सेमीकंडक्टर और एआइ की आधुनिक प्रयोगशालाओं से होकर गुजरता है, उसकी पहली सीढ़ी परीक्षा केंद्रों की शुचिता और पारदर्शिता से ही शुरू होती है।

कोचिंग के भंवर से निकल ही बनेगा भविष्यरू पीएम मोदी का संदेश है कि भारत का युवा अब केवल पारंपरिक सरकारी नौकरियों या डिग्रियों की अंधी दौड़ में अपना जीवन बर्बाद नहीं करेगा। सरकार की नई नीतियां जैसे ‘पीएम इंटर्नशिप योजना’ और कौशल विकास के नए अवसर, सीधे तौर पर उस ‘कोचिंग संस्कृति’ की जड़ों पर प्रहार करती हैं, जिसने दशकों से देश के युवाओं को बंधक बना रखा है। निश्चित ही, ये घोषणाएं उम्मीद जगाती हैं कि अब अरबों रुपये के इस कोचिंग बाजार को मात मिलेगी और देश का युवा आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा। कोचिंग के बाजार ने समाज को किस कदर प्रभावित किया है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कोचिंग संस्थानों ने आज देश में एक समानांतर और अनियंत्रित साम्राज्य खड़ा कर लिया है। इसने हमारे सामाजिक ताने—बाने को भी बहुत गहरे जख्म दिए हैं। आज एक बच्चे का बचपन 10वीं या 12वीं कक्षा में नहीं, बल्कि छठी और सातवीं कक्षा से ही कोचिंग के भंवर में फंस जाता है। पहले 10वीं—12वीं तक छात्र वर्ग का बड़ा तबका ट्यूशन या कोचिंग की शक्ल तक नहीं देखता था’ लेकिन बीते एक दशक में यह परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है। अब कोचिंग एक स्टेटस सिंबल बन गई है। कोचिंग संस्थान छात्रों को ईंसान नहीं, बल्कि केवल ‘रैंक’ और ‘रोल नंबर’ के रूप में देखने लगे हैं। इस माहौल में पला—बढ़ा युवा समाज के प्रति संवेदनशील होने के बजाय धीरे—धीरे अधिक आत्मकेंद्रित और रोबोटिक होता जा रहा है। कोचिंग के इस बाजार को खाद—पानी कहीं और से नहीं, बल्कि माता—पिता की अधूरी आकांक्षाओं और सामाजिक दिखावे से मिलता है। आज बच्चे की शिक्षा उसकी रुचि के अनुसार नहीं, बल्कि इस बात से तय होती है कि शर्मा जी या वर्मा जी के बेटे ने कौन—सा कोर्स चुना है। हर साल केवल एक से दो प्रतिशत बच्चों का चयन ही आइआइटी, एम्स या यूपीएससी जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं में हो पाता है। शेष 98 प्रतिशत युवा खुद को ‘नाकाम’ मानने लगते हैं। एक सच इस समाज को समझना होगा कि हर बच्चा आइस्टीन या सचिन तेंदुलकर नहीं हो सकता।

युवाओं का स्कोर बोर्ड—लाइक्स, कमेंट, फालोअर्स

जिंदगी में कोई भी सफलता एक दिन में नहीं मिलती। क्रिकेट की तरह जीवन भी लंबी पारी का खेल है। दिन का खेल खत्म होने पर नाबाद बल्लेबाज पवेलियन लौटता जरूर है, लेकिन उसके मन में अगली पारी के रन और बेहतर प्रदर्शन की तैयारी होती है। आज के युवा भी जिंदगी की ऐसी ही पारी खेल रहे हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि उनके हाथ में बल्ले के बजाय स्मार्टफोन है और सामने का स्कोरबोर्ड रन नहीं, बल्कि लाइक्स, कमेंट, व्यूज और फालोअर्स गिनता है। इंटरनेट मीडिया ने युवाओं को अभिव्यक्ति का अभूतपूर्व मंच दिया है। प्रतिभा को पहचान मिली है, सूचनाओं तक पहुंच आसान हुई है और दुनिया से जुड़ने के अवसर बढ़े हैं। समस्या तब शुरू होती है जब आभासी दुनिया का स्कोर ही सफलता का पैमाना बन जाता है। कितने फालोअर्स हैं, कितने लाइक्स मिले, रील कितनी वायरल हुई—इन सवालों के बीच यह सवाल पीछे छूट जाता है कि व्यक्ति ने वास्तविक जीवन में कितना सीखा, कितना बनाया और समाज के लिए कितना उपयोगी साबित हुआ। युवा जीवन की सबसे महत्वपूर्ण पूंजी समय, ऊर्जा, कल्पनाशीलता और सीखने की क्षमता है। यदि इनका बड़ा हिस्सा केवल डिजिटल लोकप्रियता हासिल करने में खर्च हो रहा है, तो हमें अपने स्कोरबोर्ड को नए सिरे से देखने की जरूरत है। असली स्कोर यह होना चाहिए कि कितनी किताबें पढ़ीं, कितने कौशल सीखे, कितनी चुनौतियों का सामना किया, कितने लोगों की मदद की और अपने भविष्य की नींव कितनी मजबूत की। भारत के लिए यह सवाल और महत्वपूर्ण है। देश की करीब आधी आबादी 29 वर्ष से कम उम्र की है। आने वाले दशकों में कामकाजी उम्र की आबादी और बढ़ेगी। यह भारत के लिए असाधारण जनसांख्यिकीय अवसर है, लेकिन युवा आबादी अपने आप जनसांख्यिकीय लाभान्श नहीं बन जाती। इसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, निष्पक्ष परीक्षाएं, रोजगार के अवसर, कौशल विकास, स्वतंत्र सोच और सुरक्षित सामाजिक वातावरण जरूरी हैं। युवा केवल नौकरी नहीं, सम्मानजनक अवसर और अपनी प्रतिभा को साबित करने का मंच चाहते हैं। उनकी बेचोनी को समझना, उनके सवालों को सुनना और उनके सपनों को अवसर देना सरकार की ही नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। विश्वविद्यालय यदि स्वतंत्र विचार के केंद्र नहीं रहेंगे, परीक्षाओं पर भरोसा कमजोर होगा और रोजगार अवसर के बजाय विशेषाधिकार का माध्यम बन जाएगा, तो हमारी युवा शक्ति निराशा में बदल सकती है। 2047 का विकसित और स्वर्णिम भारत केवल हाई—टेक नीतियों, एआइ या आधुनिक बुनियादी ढांचे से नहीं बनेगा। उसे बनाने वाले आज के युवा होंगे। इसलिए जरूरी है कि उनके हाथ में स्मार्टफोन के साथ किताब भी हो, रील के साथ वास्तविक कौशल भी हो और फालोअर्स के साथ अपना स्वतंत्र विचार भी। याद रखना होगा—कोई भी टीम केवल स्कोरबोर्ड देखकर मैच नहीं जीतती। जीत के लिए ड्रेसिंग रूम में प्रतिभाओं की अगली कतार तैयार करनी पड़ती है। भारत का असली स्कोर भी लाइक्स और फालोअर्स में नहीं, बल्कि सक्षम, संवेदनशील, स्वतंत्र और आत्मविश्वासी युवाओं में दर्ज होगा। भविष्य की चिंता जरूरी है, लेकिन भविष्य से पहले वर्तमान आता है। सुफल वर्तमान ही स्वर्णिम भविष्य की नींव रखता है।

विकास की सप्तधारा

प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से विकसित भारत के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और सप्तधारा का खाका प्रस्तुत किया। इसमें एक करोड़ युवाओं को एआई प्रशिक्षण और छात्रों को ऑनलाइन कोचिंग जैसी नई पहलें शामिल हैं, जिनके सफल क्रियान्वयन में केंद्र—राज्य सहयोग महत्वपूर्ण है।

लाल किले की प्राचीर से लगातार 13वीं बार राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने जो कुछ कहा और जिन नए कार्यक्रमों की घोषणा की, उनसे देश को विकसित बनाने की उनकी प्रतिबद्धता ही प्रकट होती है। इस अवसर पर उन्होंने जिस तरह देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का भी उल्लेख किया, उससे यह पता चलता है कि समस्याओं का समाधान उनकी प्राथमिकता में है। ऐसा होना भी चाहिए, लेकिन यही प्राथमिकता केंद्रीय सत्ता के प्रशासन की भी होनी चाहिए।

इतना ही नहीं, इस मामले में राज्य सरकारों को भी केंद्र सरकार के साथ सहयोग करना होगा। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि केंद्र सरकार की अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन में राज्य सरकारों और उनके प्रशासन की महती भूमिका होती है। देश को विकसित बनाने का लक्ष्य तब पूरा होगा, जब केंद्र और राज्य एक टीम की तरह काम करेंगे। अभी कई बार इसका अभाव दिखता है।

देश को विकसित बनाने के लिए केवल यह आवश्यक नहीं कि समस्याओं की सही तरह पहचान हो। आवश्यक यह भी है कि उनके समुचित समाधान के तौर—तरीके विकसित किए जाएं। ऐसा तब होगा, जब सरकारी योजनाओं के अनुपालन में विश्वस्तरीय मानकों और गुणवत्ता को अपनाया जाएगा। अभी ऐसा नहीं हो पा रहा है और इसीलिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं अपेक्षित नतीजे नहीं दे पा रही हैं।

इस बार लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने जो घोषणाएं कीं, उनमें प्रमुख हैं एक करोड़ युवाओं को एआई का प्रशिक्षण देना और छात्रों को ऑनलाइन कोचिंग की सुविधा उपलब्ध कराना। ये दोनों पहल सराहनीय और समय की मांग के अनुरूप हैं, लेकिन क्या सरकारी कोचिंग निजी कोचिंग संस्थानों के दबदबे को कम कर पाएगी? प्रश्न यह भी है कि कहीं युवाओं को दिए जाने वाले एआई प्रशिक्षण कार्यक्रम का हश्र कौशल विकास जैसा तो नहीं होगा? लाल किले से प्रधानमंत्री ने अगली पीढ़ी के सुधारों को लेकर शक्ति की सप्तधारा का जो उल्लेख किया, वह एक तरह से विकसित भारत के लक्ष्य को पाने का खाका है। इसका उद्देश्य देश की क्षमता का पूरा उपयोग करना है। सप्तधारा की पहली शक्ति मैन्यूफैक्चरिंग क्षमता, दूसरी शक्ति कृषि एवं खाद्य उत्पादन, तीसरी शक्ति प्रौद्योगिकी एवं नवाचार और चौथी शक्ति गति शक्ति है। इसका आशय कनेक्टिविटी से है। सप्तधारा की पांचवीं शक्ति रक्षा शक्ति, छठी शक्ति ग्रीन इकोनॉमी—ब्लू इकोनॉमी और सातवीं शक्ति देश की साफ्ट पावर है। इन सभी शक्तियों को बल तब मिलेगा, जब उनके इस्तेमाल में समाज के हर हिस्से की हिस्सेदारी होगी। इससे ही असमान विकास की समस्या का निदान होगा। अच्छा होगा कि इन शक्तियों का उपयोग नैतिक बल के साथ किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

वंदे मातरम् पर विवाद

स्वतंत्रता दिवस समारोह पर अपने मुख्यालय में संपूर्ण वंदे मातरम् के गायन को लेकर जो विवाद पैदा हुआ, उसके लिए कांग्रेस अपने अलावा अन्य किसी को दोष नहीं दे सकती। कांग्रेस कुछ भी सफाई दे, यह मानने के अच्छे—भले कारण हैं कि उसे वंदे मातरम् के संपूर्ण गायन की नई परिपाटी रास नहीं आई। गत दिवस गृह मंत्री अमित शाह ने जिस तरह सोनिया गांधी की ओर से कथित तौर पर वंदे मातरम् के गायन को रोके जाने पर कांग्रेस से माफी की मांग की, उससे यही लगता है कि कांग्रेस ने जाने—अनजाने भाजपा के हाथ में एक मुद्दा थमा दिया। यह विवाद आसानी से थमने वाला नहीं, इसका संकेत इससे भी मिलता है कि बंकिम चंद्र के वंशज ने भी सोनिया गांधी से माफी की मांग कर दी।

वंदे मातरम् को लेकर कोई पहली बार विवाद नहीं खड़ा हुआ। इस राष्ट्रीय गीत को लेकर रह—रहकर विवाद का विषय बनाने की कोशिश होती ही रही है। हाल में जब वंदे मातरम् के डेढ़ सौ साल पूरे होने पर मोदी सरकार ने उसके सभी छंद गाए जाने को अनिवार्य बनाया तब भी कांग्रेस ने उस पर आपत्ति जताई थी। इसके उपरांत जब राष्ट्रगान जन—गण—मन की तरह वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण देने संबंधी विधेयक पर संसद में चर्चा हुई तब भी कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दलों ने उसमें भाग लेने से इन्कार किया। 15 अगस्त के समारोह में केरल सरकार ने वंदे मातरम् के संपूर्ण गायन से इन्कार करके इस विवाद की जो शुरुआत की, उसे कांग्रेस मुख्यालय में हुए घटनाक्रम ने पूरा कर दिया। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर आयोजित समारोह में राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे ने हिस्सा लेने से किनारा किया। उन्होंने ऐसा दूसरी बार किया।

यह समझ आता है कि कांग्रेस को मोदी सरकार की रीति—नीति पसंद नहीं, लेकिन सरकार की रीति—नीति और राष्ट्रीय प्रतीकों में अंतर होता है। कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दलों की ओर से प्रायरू इस अंतर को भुला दिया जाता है। इससे राष्ट्रीय प्रतीकों के साथ—साथ राष्ट्रीयता की भावना का भी अनादर होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस कांग्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया और जिसने अपने अधिवेशनों में वंदे मातरम् के गायन की परंपरा प्रारंभ की, वही उसे यथोचित सम्मान देने के लिए तैयार नहीं दिख रही है। मुस्लिम लीग के विरोध के बाद वंदे मातरम् के संपूर्ण गायन की जगह उसके दो छंद ही गाने की परंपरा शुरू हुई थी, लेकिन अब इस परंपरा को बदल कर वंदे मातरम् के सभी छंद गाए जाने का नियम बनाने पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह आपत्ति किसी न किसी स्तर पर मुस्लिम लीग वाली मानसिकता को पोषण देने वाली ही है।

देश से जुड़ने की प्रवृत्ति है स्वतंत्रता

स्वतंत्रता सभ्य मानव समाज का सर्वोत्तम आविष्कार है, जो मनुष्य को अपने चुने हुए लक्ष्यों को पाने के लिए सामर्थ्य संपन्न बनाती है। आज विकास, प्रगति और उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए स्वतंत्रता को सबसे ताकतवर हथियार माना जाता है। स्वतंत्रता समर्थ बनाती है, यही सोच कर पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए विश्व में अनेक संग्राम होते आ रहे हैं। वस्तुतः प्राणिमात्र उस नैसर्गिक परिस्थिति में ही जीना चाहता है, जिसमें मुक्त होकर अपनी शर्तों पर जिया जा सके। पराधीनता के बीच रहते हुए हमें स्वयं अपने मार्ग को चुनने की छूट नहीं होती है, इसलिए वह अवांछनीय है। यह जरूर है कि स्वतंत्रता सिर्फ भोग नहीं है, क्योंकि भोग के रूप में वह दूसरों के शोषण का जरिया हो जाएगी। स्वतंत्रता देश से जुड़ने की वृत्ति है। भारत को उपनिवेश बनाने के बाद अंग्रेजों ने भारतीय समाज के जीने और सोचने के विकल्पों को सिलसिलेवार समाप्त करने की कोशिश की। उन्होंने अपने निहित स्वार्थ के दृढ़ संकल्प के साथ न केवल भारत का आर्थिक दोहन किया, बल्कि हमारे लिए विकल्प भी तय किए और अपनी सोच हमारे ऊपर लादते गए। उन्होंने हजारों वर्षों की ज्ञान—विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र की अमूल्य विरासत को झुठलाते हुए भारत को एक असभ्य देश घोषित कर दिया और बिन मांगे यहां के समाज को सभ्य बनाने की जिम्मेदारी अपने सिर उठा ली। अंग्रेज एक पूरे पैकेज के साथ एक पूरी सभ्यता को खत्म करने के अभियान पर थे, जो कई अर्थों में उनसे समृद्धतर थी। यह समृद्धि विदेशियों के लिए पहले भी आकर्षण का कारण बन चुकी थी। अंग्रेजों ने अपना उपक्रम शिक्षा और संस्कृति में बदलाव के सुनियोजित कार्यक्रम के द्वारा बहुत प्रभावी ढंग से लागू किया और उन्हें सफलता भी मिली। अंग्रेजों ने शिक्षा का जो स्वरूप, विषय वस्तु और पद्धति निर्धारित की, वह उनकी अपनी थी और यह स्वाभाविक ही था कि उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को जगह न मिले। अंग्रेजों ने औपनिवेशिक साम्राज्य को पुष्ट करने के लिए भारतीय ज्ञान के विपुल भंडार के प्रति विद्वेष और संशय का भाव इस तरह प्रचारित और प्रसारित किया कि उसे लेकर आम भारतीय के मन में संशय का भाव घर कर गया। कालांतर में भारतीय चिंतन पर से लोगों का भरोसा उठता चला गया और वह त्याज्य होती गई। उसका परिणाम सामने है— भारत अपने मौलिक अर्थ में आज के अनेक भारतीयों के लिए अपरिचित सा होता जा रहा है।

एक साथ जली दो चिताएं
बेटे की मौत के सदमे
से पिता की भी मौत
स्वतंत्रता दिवस पर एक साथ
उठी पिता-पुत्र की अर्थी

गोरखपुर,संवाददाता। बेलडांड ग्रामसभा के सोहरां गांव निवासी मोहित मौर्या (62) के बेटे राकेश मौर्या (42) की कई दिनों से तबीयत खराब थी। शुक्रवार देर शाम अचानक उनकी हालत बिगड़ गई। तेज खांसी के साथ सांस लेने में परेशानी होने पर परिजन उन्हें जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें आईसीयू में भर्ती किया लेकिन देर रात इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। खजनी थाना क्षेत्र के सोहरां गांव में स्वतंत्रता दिवस पर दर्दनाक घटना सामने आई। बीमार बेटे की मौत का सदमा पिता बर्दाश्त नहीं कर सके और कुछ ही देर बाद उनकी भी मौत हो गई। एक ही घर से पिता-पुत्र की शवयात्रा निकली और दोनों का अंतिम संस्कार एक साथ किया गया। घटना से पूरे गांव में मातम छा गया। बड़ी संख्या में ग्रामीण पीड़ित परिवार को सांत्वना देने पहुंचे। बेलडांड ग्रामसभा के सोहरां गांव निवासी मोहित मौर्या (62) के बेटे राकेश मौर्या (42) की कई दिनों से तबीयत खराब थी। शुक्रवार देर शाम अचानक उनकी हालत बिगड़ गई। तेज खांसी के साथ सांस लेने में परेशानी होने पर परिजन उन्हें जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें आईसीयू में भर्ती किया लेकिन देर रात इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। राकेश का शव गांव पहुंचा तो परिवार में कोहराम मच गया। परिजन रो-बिलख रहे थे। घर के बाहर पिता मोहित मौर्या चुपचाप बैठे थे। बेटे की मौत से आहत मोहित अचानक वहीं बैठे-बैठे एक ओर लुढ़ककर गिर पड़े। परिजन ने उन्हें बेहोश समझकर होश में लाने का प्रयास किया और चेहरे पर पानी के छींटे मारे। हालत में सुधार न होने पर डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। परिजन के मुताबिक, मोहित की मौत कार्डियक अरेस्ट से हुई। पिता-पुत्र की एक साथ मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। मोहित मौर्या के तीन बेटे थे। इनमें लालजी मौर्या, गुड्डू मौर्या और सबसे छोटे राकेश मौर्या थे। राकेश के परिवार में पत्नी के अलावा बेटा वनिता और दो बेटे कुंदन व शिवम हैं। पिता-पुत्र की एक साथ मौत से गांव में भी शोक की लहर है।

पैडलेगंज में पुलिस मुठभेड़, दो चेन स्नेचर गिरफ्तार- दोनों के पैर में लगी गोली

गोरखपुर,संवाददाता। एसपी सिटी निमिष पाटील के मुताबिक, दोनों आरोपियों की रविवार देर रात करीब दो बजे शहर में लोकेशन मिली थी। वे दोबारा वारदात करने की तैयारी में थे। मुखबिर की सूचना पर कैंट पुलिस, एंटीथेफ्ट सेल और सर्विलांस टीम ने पैडलेगंज के पास चेकिंग शुरू की। इसी दौरान बाइक से जा रहे दो युवकों को पुलिस ने रोकने का प्रयास किया। कैंट इलाके में रविवार देर रात पुलिस और चेन स्नेचरों के बीच मुठभेड़ हो गई। पैडलेगंज के पास चेकिंग के दौरान बाइक सवार दो बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी और भागने का प्रयास किया। जवाबी कार्रवाई में दोनों के पैर में गोली लगी, जिसके बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। मुठभेड़ में कांस्टेबल भूपेंद्र यादव भी घायल हुए हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल भेजा गया, जहां दोनों आरोपियों का पुलिस की निगरानी में उपचार चल रहा है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान गगहा क्षेत्र के देउरवीर गांव निवासी अजय उर्फ मंगरु और बेलीपार क्षेत्र के कसिहार निवासी संजय के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, दोनों कई चेन स्नेचिंग की वारदातों में शामिल रहे हैं। उनके कब्जे से छिनैती की दो चेन, वारदात में इस्तेमाल



बाइक, दो देशी तमंचे, दो खोखे और दो जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं। एसपी सिटी निमिष पाटील के मुताबिक, दोनों आरोपियों की रविवार देर रात करीब दो बजे शहर में लोकेशन मिली थी। वे दोबारा वारदात करने की तैयारी में थे। मुखबिर की सूचना पर कैंट पुलिस, एंटीथेफ्ट सेल और सर्विलांस टीम ने पैडलेगंज के पास चेकिंग शुरू की। इसी दौरान बाइक से जा रहे दो युवकों को पुलिस ने रोकने का प्रयास किया। आरोपियों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की, जिसमें दोनों के पैर में गोली लगी। इसके बाद उन्हें पकड़ लिया गया। मुठभेड़ के दौरान

कांस्टेबल भूपेंद्र यादव को भी चोट आई। एसपी सिटी के अनुसार, पुलिस के अनुसार, दोनों आरोपियों के खिलाफ आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है। **दो महिलाओं से चेन छिनने के मामले में थे आरोपी** पुलिस के मुताबिक, दोनों बदमाश कैंट थाने में दर्ज दो चेन स्नेचिंग के मामलों में वांछित थे। 20 जुलाई 2026रु एक महिला अपने पति के साथ सब्जी लेने जा रही थी। इसी दौरान बाइक सवार आरोपियों ने उसके गले से चेन छीन ली और फरार हो गए। महिला की तहरीर पर कैंट थाने में मुकदमा दर्ज किया गया था। वहीं, 29 जुलाई 2026: सुबह टहलने

निकली महिला के गले से आरोपियों ने चेन छीन ली थी। पुलिस ने दोनों मामलों में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। मुठभेड़ को लेकर एक अन्य अभियोग भी दर्ज किया गया है। **अजय पर सात, संजय पर 11 मुकदमे** देउरवीर निवासी अजय उर्फ मंगरु के खिलाफ गोरखपुर के विभिन्न थानों में कुल सात मुकदमे दर्ज हैं। इनमें कैंट थाने के लूट और चेन स्नेचिंग से जुड़े मामले, गोला थाने का मामला, गगहा थाने में गोवध निवारण अधिनियम से जुड़ा मुकदमा और खजनी थाने में आर्म्स एक्ट समेत गंभीर धाराओं का मामला शामिल है। कसिहार निवासी संजय के खिलाफ विभिन्न थानों में कुल 11 मुकदमे दर्ज हैं। इनमें बेलीपार, खजनी, बांसगांव, चौरीचौरा और खोराबार थानों में दर्ज मामले शामिल हैं। उसके खिलाफ गैंगस्टर एक्ट, चोरी, लूट, आर्म्स एक्ट समेत अन्य धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। कैंट थाने के दोनों चेन स्नेचिंग के मुकदमे भी उसके आपराधिक इतिहास में शामिल किए गए हैं। **यह हुई बरामदगी** छिनैती की दो चेन, वारदात में प्रयुक्त एक मोटरसाइकिल, दो देशी तमंचे, दो खोखे व दो कारतूस।

एम्स और बीआरडी में स्वतंत्रता दिवस पर शपथ

स्वतंत्रता दिवस पर गोरखपुर के एम्स और बीआरडी मेडिकल कॉलेज में नशे के खिलाफ जागरूकता का संदेश दिया गया। शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने नशामुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया और इसे जनआंदोलन बनाने का प्रण किया।

संवाददाता, गोरखपुर। देश की आजादी के पर्व स्वतंत्रता दिवस पर शनिवार को एम्स और बीआरडी मेडिकल कालेज में नशे के खिलाफ जागरूकता का संदेश दिया गया। दैनिक जागरण के तत्वावधान में चल रहे नशे के विरुद्ध अभियान के अंतर्गत दोनों चिकित्सा संस्थानों में ध्वजारोहण के बाद शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने नशे से पूरी तरह दूर रहने का संकल्प लिया। साथ ही समाज को नशे की गिरफ्त से मुक्त कराने के लिए लोगों को जागरूक करने का प्रण भी लिया। एम्स गोरखपुर में कार्यकारी निदेशक डा. विभा दत्ता के नेतृत्व में ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। इसके बाद संस्थान के चिकित्सकों, शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने नशे से दूरी बनाए रखने की



शपथ ली। उन्होंने संकल्प लिया कि स्वयं किसी भी प्रकार के नशे का सेवन नहीं करेंगे और अपने परिवार, मित्रों तथा आसपास के लोगों को भी इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करेंगे। **नशे की आदत ऐसे डालती है प्रभाव** इस दौरान नशे को युवा पीढ़ी के भविष्य के लिए गंभीर चुनौती बताते हुए इससे बचाव को सामाजिक जिम्मेदारी बनाने पर

जोर दिया गया। डा. विभा दत्ता ने कहा कि नशे की शुरुआत अक्सर छोटी आदत से होती है, लेकिन धीरे-धीरे यह व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और सामाजिक जीवन को प्रभावित करने लगती है। तंबाकू, शराब और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ता है। ऐसे में युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए परिवार, शिक्षण संस्थानों और समाज को मिलकर प्रयास करना होगा। स्वस्थ नागरिक ही मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इसी क्रम में बीआरडी मेडिकल कालेज में भी स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान नशे के खिलाफ आवाज बुलंद की गई।

प्राचार्य डा. धर्मेन्द्र कुमार समेत बड़ी संख्या में चिकित्सकों, शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि देश को बाहरी गुलामी से आजादी मिलने के साथ ही समाज को नशे जैसी बुराई से भी मुक्त करना जरूरी है। युवा पीढ़ी को नशे से बचाकर ही स्वस्थ और मजबूत समाज की नींव रखी जा सकती है। चिकित्सा संस्थानों में लिए गए इस संकल्प का उद्देश्य केवल शपथ तक सीमित नहीं, बल्कि नशे के खिलाफ जागरूकता को जनआंदोलन का रूप देना है। इसी संदेश को मजबूती देते हुए नशे से आजादी का संकल्प लेकर चिकित्सकों और विद्यार्थियों ने समाज को स्वस्थ, जागरूक और नशामुक्त बनाने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

गोरखपुर में सुरक्षा का नया नेटवर्क, शहर में खुलेंगी

6 नई पुलिस चौकियां, बढ़ेगी गश्त और निगरानी

गोरखपुर में शहर के विस्तार और बढ़ती आबादी के मद्देनजर पुलिस अपनी पहुंच और निगरानी बढ़ाने की तैयारी में है। इसके तहत छह नई पुलिस चौकियां खोलने का प्रस्ताव तैयार किया गया है, जिससे गश्त और सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होगी।

संवाददाता, गोरखपुर। शहर के विस्तार और तेजी से बढ़ती आबादी के बीच अपनी पहुंच और निगरानी बढ़ाने की पुलिस ने तैयारी शुरू कर दी है। अधिकारियों ने छह नई पुलिस चौकी खोलने का प्रस्ताव तैयार किया गया है। धर्मशाला अंडरपास, खोराबार क्षेत्र में तीन स्थान, गुलरिहा थाने के पीछे और ग्रीन सिटी के पास चौकी प्रस्तावित है। एसएसपी डॉ. कौस्तुभ के अनुसार, चौकियों के लिए स्थान भी मिल चुका है और जल्द इन्हें शुरू किया जाएगा। नई चौकियां शुरू होने के बाद जिले में पुलिस चौकियों की संख्या 50 से अधिक हो जाएगी। वर्तमान में करीब 45 पुलिस चौकियां संचालित हैं। इन चौकियों का उद्देश्य खासकर तेजी से

विकसित हो रहे शहरी इलाकों, रिंग रोड और उसके आसपास के क्षेत्रों में पुलिस की नियमित मौजूदगी बढ़ाना है। गुलरिहा थाने के पीछे प्रस्तावित चौकी को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह इलाका वर्तमान में पिपराइच थाना क्षेत्र में आता है, लेकिन भौगोलिक रूप से गुलरिहा थाने के काफी करीब है। थाना सीमा अलग होने के कारण गुलरिहा पुलिस की नियमित निगरानी सीमित रहती है। चौकी बनने के बाद क्षेत्र में पुलिस की सीधी निगरानी बढ़ेगी और किसी घटना की सूचना मिलने पर पुलिस के पहुंचने में कम समय लगेगा। खोराबार क्षेत्र में तीन चौकियों के प्रस्ताव को भी रिंग रोड और आसपास बढ़ रही गतिविधियों से जोड़कर देखा जा रहा है।

पुलिस का मानना है कि नई चौकियों से अपराध की सूचना पर त्वरित कार्रवाई के साथ ही नियमित गश्त भी बढ़ाई जा सकेगी। नई चौकियों के साथ पुलिस ने सीसी कैमरों का नेटवर्क मजबूत करने की तैयारी भी शुरू की है। एसएसपी ने सभी चौकी प्रभारियों को अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक सीसी कैमरे लगवाने का सुझाव दिया है। प्रमुख चौराहों, बाजारों, संवेदनशील स्थानों और प्रमुख आवागमन मार्गों पर कैमरे लगाने पर जोर दिया जा रहा है। वहीं, पहले से लगे कैमरों की भी नए सिरे से जांच होगी। एसएसपी डॉ. कौस्तुभ ने बताया कि छह और पुलिस चौकियों का प्रस्ताव तैयार किया गया है। जल्द ही इन्हें शुरू किया जाएगा।

पति ने कर दी ऐसी हालत...

हनीमून से लौटने के बाद नवविवाहिता पहुंच गई पुलिस थाने संवाददाता, गोरखपुर। शादी के महज कुछ ही दिनों बाद हनीमून पर गई एक नवविवाहिता के साथ हैवानियत का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पीड़ित महिला ने अपने पति पर अंडमान-निकोबार के एक होटल में बेरहमी से मारपीट करने और गला दबाकर हत्या की कोशिश का आरोप लगाया है। महिला की तहरीर पर गोरखपुर के रामगढ़ताल थाना पुलिस ने पति, सास और ननद के खिलाफ दहेज उत्पीड़न और हत्या के प्रयास समेत गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। रामगढ़ताल क्षेत्र के तारामंडल की रहने वाली पीड़िता ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी शादी 30 मई 2023 को दिल्ली के मयूर विहार (फेज-3, थाना गाजीपुर) निवासी निखिल मिश्रा के साथ हुई थी। शादी में उसके पिता ने नकदी और कार समेत करीब 40 लाख रुपये का दहेज दिया था। इसके बावजूद ससुराल पहुंचते ही सास, ननद और पति उसे कम

दहेज का ताना देकर प्रताड़ित करने लगे। **हनीमून के दौरान होटल में हैवानियत** पीड़िता के मुताबिक, 4 जुलाई 2023 को वह अपने पति के साथ अंडमान-निकोबार हनीमून पर गई थी। वहां अचानक उसके पेट में तेज दर्द और रक्तस्राव (ब्लीडिंग) शुरू हो गया। इस बात से नाराज होकर पति निखिल मिश्रा ने आपा खो दिया और होटल के कमरे में ही उसे लात-घुसों और थपड़ों से पीटना शुरू कर दिया। उसने आरोप लगाया कि पति ने उसका गला दबाकर जान लेने की भी कोशिश की। चीख-पुकार सुनकर पहुंचे होटल कर्मचारियों ने किसी तरह बीच-बचाव कर उसकी जान बचाई। इसके बाद जब कपल हनीमून से वापस घर लौटे, तो 14 जुलाई 2023 को ससुराल वालों ने पीड़िता को मारपीट कर घर से निकाल दिया। इसके बाद से ही पीड़िता अपने मायके में रह रही थी और न्याय के लिए भटक रही थी।

स्वतंत्रता दिवस से पहले एक्शन में यूपी एटीएस

हापुड़ में मस्जिद से दो संदिग्धों को दबोचा, मेरठ लेकर गई टीम



हापुड़.संवाददाता। एटीएस ने शेरपुर गांव की कुरैशियान मस्जिद से दो संदिग्धों को हिरासत में लिया। टीम उन्हें मेरठ ले गई। मस्जिद कमेटी के अनुसार, वे बाहरी थे। एटीएस उनका पीछा कर रही थी। मौके पर एक संदिग्ध बाइक भी मिली है। यूपी के हापुड़ जिले के बहादुरगढ़ थाना क्षेत्र के गांव शेरपुर स्थित कुरैशियान मस्जिद में शुक्रवार को एटीएस ने छापा मारकर यहां मौजूद दो संदिग्धों को हिरासत में ले लिया। टीम दोनों को यहां से लेकर मेरठ रवाना हो गई। मौके पर एक संदिग्ध बाइक भी खड़ी मिली है। मस्जिद इंतजामियां कमेटी के अनुसार, दोनों युवक क्षेत्र के रहने वाले नहीं थे और बिना किसी परिचय के मस्जिद में पहुंचे थे। उन्होंने मस्जिद के बाहर बाइक

खड़ी की और अंदर चले गए। सुरक्षा एजेंसी दोनों युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। हापुड़ पुलिस ने एटीएस के पहुंचने की पुष्टि की है। लेकिन इसके अलावा पुलिस के पास और कोई जानकारी नहीं है। ग्रामीणों के अनुसार दो दाड़ी और टोपी पहने मुस्लिम युवक मेरठ नंबर बाइक से सुबह यहां पहुंचे थे। दोनों की उम्र करीब 25 साल के आसपास रही होगी। इनके यहां पहुंचने के पांच मिनट बाद ही एटीएस की टीम यहां पहुंच गई और दोनों को हिरासत में ले लिया। ऐसा लग रहा था कि टीम दोनों का पीछा करते हुए यहां पहुंची थी। सीओ राहुल यादव का कहना है कि एटीएस के आने की जानकारी मिली है। मामले की जानकारी की जा रही है।

स्वतंत्र भारत के इतिहास में अर्थशास्त्र विभाग को मिली पहली महिला मुखिया

प्रो. रोली ने संभाला कार्यभार

लखनऊ.संवाददाता। प्रो. रोली मिश्रा ने लविवि से अपनी पढ़ाई पूरी की है। उन्होंने 1995 में यहां से स्नातक किया था। 1997 में परास्नातक की परीक्षा पास की थी। इसके बाद 2003 में पीएचडी और अब अर्थशास्त्र विभाग की पहली महिला मुखिया के रूप में जिम्मेदारी संभाली है। स्वतंत्र भारत और लखनऊ विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार अर्थशास्त्र विभाग की कमान किसी महिला को मिली है। 105 वर्ष पुराने अर्थशास्त्र विभाग में प्रोफेसर रोली मिश्रा ने आगामी तीन वर्ष के लिए विभागाध्यक्ष का कार्यभार संभाल लिया है। इसके साथ ही विभाग में महिला नेतृत्व का नया अध्याय शुरू हुआ है। प्रो. रोली मिश्रा अर्थशास्त्र की विशेषज्ञ हैं और उन्होंने विभिन्न शोध कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी विशेषज्ञता और शोध अनुभव को देखते हुए उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। कुलपति ने विवि की प्रथम परिनियमावली के प्रावधानों के तहत उनकी नियुक्ति को स्वीकृति दी है। यह पदभार आगामी तीन वर्ष की अवधि के लिए सौंपा गया है। उनका कार्यकाल अधिवर्षता आयु प्राप्ति या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो, रहेगा। विश्वविद्यालय की कुलसचिव भावना मिश्रा ने इस संबंध में जानकारी दी। **लविवि से ही पढ़ी हैं प्रो. रोली मिश्रा** गोमतीनगर निवासी प्रो. रोली मिश्रा ने लविवि से अपनी पढ़ाई

पूरी की है। उन्होंने 1995 में यहां से स्नातक किया था। 1997 में परास्नातक की परीक्षा पास की थी। इसके बाद 2003 में पीएचडी। फिर कानपुर डीवीएस कॉलेज में शिक्षक के पद पर सेवाएं दीं। वर्ष 2016 में लविवि में अर्थशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर जॉइन किया था। **1921 में शुरू हुआ था अर्थशास्त्र विभाग का सफर** लखनऊ विश्वविद्यालय की आधिकारिक स्थापना 25 नवंबर 1920 को हुई थी। अर्थशास्त्र विभाग की स्थापना वर्ष 1921 में विश्वविद्यालय के औपचारिक शिक्षण की शुरुआत के साथ ही हुई थी। प्रो. राधाकमल मुखर्जी 1921 में विभाग के पहले अध्यक्ष बने थे। उनके नेतृत्व और प्रो. डीपी मुखर्जी जैसे प्रख्यात विद्वानों के मार्गदर्शन में विभाग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्लखनऊ स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी के नाम से विख्यात हुआ। विभाग की खासियत अर्थशास्त्र को सामाजिक मूल्यों, पर्यावरण और मानव कल्याण से जोड़ने की रही। उस दौर में जब अर्थशास्त्र को मुख्य रूप से सांख्यिकी और गणितीय आंकड़ों तक सीमित माना जाता था, तब लखनऊ विश्वविद्यालय के इस विभाग ने मानवीय पहलुओं को ध्यान में रखकर अध्ययन की परंपरा विकसित की। इसी परंपरा ने विभाग को वैश्विक पहचान दिलाई। आज भी विभाग अपनी ऐतिहासिक विरासत और समृद्ध परंपरा के साथ आगे बढ़ रहा है।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर चिकन-मटन की दुकानें बंद कराने के खिलाफ याचिका खारिज

प्रयागराज.संवाददाता। सावन में अमरोहा की चिकन-मटन दुकानों को बंद कराने के नोटिस के खिलाफ दाखिल जनहित याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि याचिका पब्लिक इंटरेस्ट में नहीं, बल्कि ‘पब्लिसिटी इंटरेस्ट’ में दाखिल की गई है। इसके साथ ही अदालत ने याचिका खारिज कर दी। सावन माह में अमरोहा में चिकन और मटन की दुकानों को बंद कराने के लिए जारी नोटिस को चुनौती देने वाली जनहित याचिका को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने शुक्रवार को खारिज कर दिया। अदालत ने याचिका दाखिल करने वाले अधिवक्ता नासिर फारूक की मंशा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह याचिका पब्लिक इंटरेस्ट नहीं, बल्कि पब्लिसिटी इंटरेस्ट में दाखिल की गई है। याचिका में सावन माह के दौरान चिकन शॉप



और मटन शॉप बंद कराने के लिए जारी नोटिस की वैधानिकता को चुनौती दी गई थी। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता रामानंद पांडेय ने याचिका का विरोध किया।याची की ओर से अधिवक्ता मुस्तकीम अहमद ने अदालत को बताया कि अमरोहा में कांवड़ यात्रा मार्ग से हटकर स्थित चिकन की दुकानों को भी पुलिस ने बिना तारीख के नोटिस जारी कर

बंद करा दिया है। इससे बड़ी संख्या में दुकानदारों और इससे जुड़े लोगों की आजीविका प्रभावित हो रही है। याचिका में दावा किया गया था कि नोटिस में केवल चार दुकानें बंद रखने का उल्लेख किया गया है, लेकिन प्रशासन की ओर से पूरे सावन माह में चिकन और मटन की दुकानें नहीं खुलने दी जा रही हैं। आरोप यह भी था कि कांवड़ मार्ग के अलावा गलियों और अन्य स्थानों पर स्थित दुकानों को भी बंद कराया गया है।याची ने हाईकोर्ट से हस्तक्षेप करते हुए जारी किए गए अनडेटेड नोटिस को रद्द करने की मांग की थी। याचिका में कहा गया था कि दुकानों के बंद रहने से सैकड़ों लोगों के सामने रोजगार और आजीविका का संकट पैदा हो गया है। हालांकि, सुनवाई के बाद अदालत ने याचिका को खारिज कर दिया।

शिक्षक कम होने से भड़के सर्वोदय विद्यालय के छात्र, सड़क पर उतरे

लखनऊ.संवाददाता। पारा स्थित सर्वोदय विद्यालय के छात्रों ने शिक्षकों की कमी को लेकर सड़क पर प्रदर्शन किया। छात्रों का आरोप है कि करीब 450 विद्यार्थियों के लिए केवल सात शिक्षक हैं, जिससे पढ़ाई प्रभावित हो रही है। प्रदर्शन के कारण यातायात बाधित हुआ। छात्रों ने पर्याप्त शिक्षक तैनात होने तक आंदोलन जारी रखने की बात कही।पारा थाना क्षेत्र स्थित जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय के छात्रों ने शिक्षक की कमी को लेकर मंगलवार को प्रदर्शन किया। बुद्धेश्वर पेट्रोल पंप के सामने बड़ी संख्या में छात्रों ने सड़क पर प्रदर्शन करते हुए जाम लगा दिया। सूचना पर पारा पुलिस मौके पर पहुंची और छात्रों को समझाने के साथ यातायात सुचारु कराने का प्रयास कर रही है। छात्रों का आरोप है कि विद्यालय में करीब 450 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं, जबकि पढ़ाने के लिए केवल सात शिक्षक हैं। इससे पढ़ाई प्रभावित हो रही है। छात्रों ने विद्यालय में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की तैनाती की मांग की है। प्रदर्शन

के कारण सड़क पर वाहनों की आवाजाही प्रभावित हुई। पुलिस छात्रों से बातचीत कर उन्हें सड़क से हटाने और यातायात व्यवस्था सामान्य कराने में जुटी है। छात्रों का कहना है कि शिक्षकों की कमी दूर होने तक उनका प्रदर्शन जारी रहेगा। **भोजन में कीड़े मिलने से भड़के सर्वोदय विद्यालय के छात्र** पारा इलाके के मोहानरोड स्थित जयप्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय के छात्रों ने शुक्रवार सुबह साढ़े नौ बजे विद्यालय की अव्यवस्थाओं और लापरवाही के खिलाफ बुद्धेश्वर से मोहान रोड जाने वाले मार्ग पर बैठकर प्रदर्शन किया। बड़ी संख्या में छात्रों ने सड़क पर बैठकर शिक्षकों और कर्मचारियों पर लापरवाही के आरोप लगाए, जिससे मार्ग पर आवागमन प्रभावित हुआ। छात्रों का आरोप है कि विद्यालय में मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता खराब है और खाने में कई बार कीड़े मिलने की शिकायत के बावजूद सुनवाई नहीं होती। छात्रों ने विद्यालय के फार्मासिस्ट पर भी लापरवाही का

आरोप लगाया। उनका कहना है कि तबीयत खराब होने पर पर्याप्त उपचार के बजाय सिर्फ डोलू टैबलेट देकर मामला टाल दिया जाता है। छात्रों के सड़क पर प्रदर्शन की जानकारी मिलते ही समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण, प्रमुख सचिव अनुराग यादव मौके पर पहुंचे। उन्होंने प्रदर्शन कर रहे छात्रों को समझा-बुझाकर शांत कराया और उन्हें विद्यालय परिसर में ले जाकर उनकी समस्याएं सुनीं। मंत्री ने छात्रों को जल्द समस्याओं का निस्तारण कराने का आश्वासन दिया, जिसके बाद प्रदर्शन समाप्त हुआ।मंत्री असीम अरुण ने कहा मीडिया से बातचीत में कहा कि शिक्षकों की कमी के कारण भी छात्रों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षकों से संबंधित मामला न्यायालय में विचाराधीन है। उन्होंने कहा कि एक सप्ताह के भीतर न्यायालय में प्रभावी पैरवी कर मामले का निस्तारण कराने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही विद्यालय की अन्य समस्याओं का भी जल्द समाधान कराया जाएगा।

गनर पति की सर्विस राइफल से गोली मारकर पत्नी ने की आत्महत्या

सहारनपुर.संवाददाता। सहारनपुर के हकीकत नगर में खनन विभाग में तैनात गनर की पत्नी ने सर्विस राइफल से गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे और जांच की। आत्महत्या के कारणों का अभी पता नहीं चल सका है। सहारनपुर कोतवाली सदर बाजार क्षेत्र के हकीकत नगर में खनन विभाग में तैनात गनर की पत्नी ने सर्विस राइफल से गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना के बाद आसपास के क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलने पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे और मामले की जांच की। **हकीकत नगर में किराये के मकान में रह रहा था परिवार** खनन विभाग में गनर के पद पर तैनात टिकू कुमार मूल रूप से मेरठ के हस्तिनापुर क्षेत्र के रहने वाले हैं। वह अपनी पत्नी सविता और दो बेटियों के साथ पिछले करीब दो से तीन वर्षों से हकीकत नगर में मनीष कुमार के मकान में किराये पर रह रहे थे।

ये हैं यूपी के अनोखे गांव पुलिस बुलानी हो या एंबुलेंस, मोबाइल लेकर नेटवर्क ढूंढते हैं लोग

सोनभद्र.संवाददाता। यूपी के सोनभद्र जिले में कई गांवों में मोबाइल नेटवर्क नहीं पहुंचा। ऐसे में एंबुलेंस को फोन करना हो या पुलिस को तो ऊंचे स्थानों पर पहुंचकर फोन करना पड़ता है। देश को बिजली कोयला देने वाले ऊर्जांचल के कई गांवों में आजादी के सात दशक बाद भी मोबाइल नेटवर्क नहीं पहुंच पाया है। इससे ग्रामीणों को काफी परेशानी होती है। मदद के लिए पुलिस बुलानी हो या एंबुलेंस, ग्रामीण हाथ में मोबाइल लेकर ऊंचे स्थानों पर जाकर नेटवर्क ढूंढते फिरते हैं। विद्यालय व अन्य सरकारी कार्यों के फॉर्म भरने में भी परेशानी होती है। एक तरफ देश में 5-जी नेटवर्क का जाल तेजी से बिछाया जा रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ रिहंद और तापीय परियोजनाओं से विस्थापित गांव कुलडोमरी, रणहोर, जोगेंद्रा के कई टोलों में आज तक 2-जी नेटवर्क भी नहीं पहुंचा है। इस कारण ग्रामीणों को आपात स्थिति में बहुत परेशानी होती है। एंबुलेंस को फोन करना हो या पुलिस को तो ऊंचे स्थानों पर पहुंचकर फोन करना पड़ता है और लोकेशन देने के लिए भी एक आदमी को उसी स्थान पर खड़ा रहना पड़ता है। विद्यालयों में फॉर्म भरने में भी समस्या होती है। नेटवर्क न होने के कारण शिक्षकों को भी फीडिंग का कार्य घर पर जाकर करना पड़ता है। हम लोगों के टोले में मोबाइल नेटवर्क नहीं है। बात करना हो तो ऊंचे स्थानों पर जाना पड़ता है। आपात

स्थिति में समस्या होती है। हम लोगों ने कई बार मांग की गई लेकिन अब तक टोले में नेटवर्क नहीं पहुंचा है। —**अशोक दुबे, मोहलाइनसोत** विद्यालय में नेटवर्क की समस्या है। सिर्फ छत पर नेटवर्क मिलता है। ऑनलाइन फीडिंग या किसी से बात करनी हो तो छत पर जाकर बात करनी पड़ती है। इससे समस्या होती है। —**देवेन्द्र कुमार, प्रधानाचार्य राजकीय मॉडल कॉलेज, मेरडदह** गांव में लंबे समय से नेटवर्क की समस्या है। विद्यालय में ऑनलाइन फीडिंग का कार्य नहीं हो पाता है। यह कार्य घर जाकर करना पड़ता है। नेटवर्क नहीं होने के कारण स्कूल में स्मार्ट क्लास भी नहीं चल पा रहा है। —**मनोज सिंह, शिक्षक प्रावि लोझरा** गांव में नेटवर्क के लिए सर्वे हो गया है। एस्टीमेट तैयार कर स्वीकृति के लिए उच्च अधिकारियों के पास गया हुआ है। स्वीकृति मिलते ही मोबाइल टावर लगाए जाएंगे। —**धर्मेन्द्र सिंह, एसडीओ बीएसएनएल सोनभद्र** **इन टोलों में है नेटवर्क की ज्यादा समस्या** रणहोर गांव के पश्चिमी टोला, पंचायत धुईहाडांड टोले में नहीं है। इसी तरह टोले में नेटवर्क नहीं है। कुलडोमरी गांव डेनिया, पडरवा, बेनादह, मोहलाइनसोत, भवन पर, गोडारी, कोल बस्ती, जोगेंद्रा गांव में धुर्वाह, जट्टी, परसीधाही के खोड़िया, मेरडदह, बड़हरा, खुजरा, लोझरा टोले में नेटवर्क नहीं है।

लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेस-वे का बुरा हाल, 63 किमी में मिले 64 गड्ढे

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे के उद्घाटन के एक महीने बाद सड़क की गुणवत्ता पर सवाल उठे हैं। करीब 45 किलोमीटर हिस्से में 64 गड्ढे मिले। कई जगह पैचवर्क, सड़क मरम्मत, नालियों और पुल की दरारों पर काम जारी है। मिट्टी के ढेर और घास भी दिखाई दी। निर्माण कंपनी ने मरम्मत तेज कर दी है। टोल शुल्क के लिहाज से देश के सबसे महंगे एक्सप्रेसवे में शामिल कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेसवे का उद्घाटन 13 जुलाई को हुआ था। उद्घाटन का एक महीना पूरा होने पर अमर उजाला ने एक्सप्रेसवे की लाइव पड़ताल की तो सड़क की गुणवत्ता और निर्माण की तैयारियों पर कई सवाल खड़े होते दिखाई दिए। 63 किलोमीटर लंबे एक्सप्रेसवे के करीब 45 किलोमीटर के ग्रीनफील्ड हिस्से में छोटे बड़े 64 गड्ढे मिले। तस्वीरों में देखिए पूरा हाल...

1. 45 किमी में मिले 64 गड्ढे

कानपुर-लखनऊ एक्सप्रेसवे के करीब 45 किलोमीटर लंबे ग्रीनफील्ड हिस्से की पड़ताल में 64 छोटे-बड़े गड्ढे मिले। इनमें से अधिकांश को भर दिया गया है, लेकिन कई स्थानों पर सड़क की लंबी पट्टियों की मरम्मत अभी जारी है। सड़क की स्थिति और जगह-जगह चल रहे काम के कारण एक्सप्रेसवे पर 45 मिनट में कानपुर पहुंचने का दावा जमीन पर करीब 70 मिनट का सफर बन गया है।

2. पैचवर्क उखड़ा, दोबारा मरम्मत

कई स्थानों पर पहले की गई मरम्मत का पैचवर्क दोबारा उखड़ा मिला। कानपुर से लखनऊ की दिशा में समस्या ज्यादा नजर आई। कहीं लंबा पैचवर्क किया जा रहा है तो कहीं पूरी सड़क को काटकर नई सतह तैयार की जा रही है।

3. सड़क किनारे मिट्टी के ढेर



एक्सप्रेसवे के दोनों ओर कम से कम 42 स्थानों पर मिट्टी के ढेर मिले। सर्विस लेन के किनारे करीब ढाई फीट तक लंबी घास भी दिखाई दी। इससे निर्माण के बाद की फिनिशिंग और रखरखाव को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं।

4. 28 से 35 किमी तक मरम्मत

लखनऊ से कानपुर की ओर करीब 28वें से 35वें किलोमीटर तक लगभग साढ़े छह से सात किलोमीटर के हिस्से में साइड लेन और सड़क किनारे मरम्मत का काम चलता मिला। सड़क किनारे गिट्टी, डामर और भारी मशीनें मौजूद थीं।

5. नालियां बनीं, फिर तोड़ी गईं

करीब 37.6 किलोमीटर तक पांच स्थानों पर नालियों का काम जारी मिला। नालियां बनने के बाद पानी

की निकासी में समस्या सामने आई। कई जगह क्रैश बैरियर ने नालियों का रास्ता बाधित किया, जिसके चलते उन्हें दोबारा दुरुस्त किया जा रहा था।

6. पुल पर दरार की मरम्मत

39.5 किलोमीटर के पास बने पुल पर दरार भरने का काम तेजी से चलता मिला। इसके कुछ ही आगे 39.8 किलोमीटर के पास सड़क की बड़े पैमाने पर कटाई कर दोबारा निर्माण किया जा रहा था।

7. चार लेन में एक पर यातायात

मरम्मत वाले हिस्से में चार लेन में से केवल एक लेन पर यातायात चलता दिखाई दिया। हालांकि औपचारिक डायवर्जन नहीं था, लेकिन मरम्मत और असमतल सड़क के कारण वाहन चालकों की रफ्तार प्रभावित हुई।

अपहरण की रची साजिश

11वीं के छात्र ने एआई से बनवाई फूटी आंख की तस्वीर, पिता से मांगे 1 लाख

गोरखपुर, संवाददाता। एसपी के मुताबिक साजिश के तहत छात्र ने अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया। इसके बाद पब्लिक वाईफाई का इस्तेमाल करते हुए पिता के व्हाट्सएप पर एक लाख रुपये की मांग वाला मैसेज भेजा। उसने एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की मदद से आंख पर गंभीर चोट जैसी तस्वीर तैयार करवाई और उसे भी पिता के मोबाइल पर भेज दिया। तस्वीर देखकर पिता को लगा कि बेटे का अपहरण हो गया है और उसके साथ मारपीट की गई है। ऑनलाइन गेम खेलने को लिया गया कर्ज चुकाने के लिए संतकबीरनगर निवासी 11वीं के छात्र ने अपने ही अपहरण की साजिश रच डाली। गर्लफ्रेंड की मदद से अपनी फूटी आंख वाली एआई तस्वीर बनवाई और उसे मंगलवार की शाम पिता को भेजकर एक लाख रुपये की फिरोती मांगी। वह गोरखपुर के सिकरीगंज जाने की बात कहकर घर से निकला था। सिकरीगंज थाने में पिता ने अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई। पुलिस ने सर्विलांस की मदद से उसे दो घंटे के भीतर उसके दोस्त के घर से ढूढ़ निकाला। एसपी साउथ दिनेश कुमार पुरी के मुताबिक, संतकबीरनगर के धनघटा क्षेत्र निवासी किशोर 11वीं का छात्र है। उसके पिता व्यापार करते हैं। छात्र ऑनलाइन गेम खेलने का आदी है। गेम में रुपये हारने के बाद उस पर कर्ज बढ़ता गया। पॉकेट मनी खत्म होने के साथ ही उसने दोस्तों से भी रुपये उधार ले रखे थे। कर्ज चुकाने के लिए उसने पिता से एक लाख रुपये लेने की साजिश रची। मंगलवार को वह सिकरीगंज बाजार जाने की बात कहकर घर से निकला था। एसपी के मुताबिक साजिश के तहत छात्र ने अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया। इसके बाद पब्लिक वाईफाई का

इस्तेमाल करते हुए पिता के व्हाट्सएप पर एक लाख रुपये की मांग वाला मैसेज भेजा। उसने एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की मदद से आंख पर गंभीर चोट जैसी तस्वीर तैयार करवाई और उसे भी पिता के मोबाइल पर भेज दिया। तस्वीर देखकर पिता को लगा कि बेटे का अपहरण हो गया है और उसके साथ मारपीट की गई है। उन्होंने तत्काल धनघटा पुलिस को सूचना दी। धनघटा पुलिस ने सिकरीगंज थाने में शिकायत दर्ज कराने को कहा। किशोर के पिता रात 12 बजे सिकरीगंज थाने पहुंचे और अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई। मोबाइल फोन बंद था पर पब्लिक वाईफाई के इस्तेमाल से मिला सुराग मोबाइल बंद होने के बावजूद छात्र के पब्लिक वाईफाई इस्तेमाल करने से पुलिस को अहम सुराग मिला। सर्विलांस की मदद से सिकरीगंज पुलिस टीम ने करीब सवा दो घंटे में उसकी लोकेशन ट्रेस कर ली और उसे खोज लिया। पूछताछ में सामने आया कि छात्र अपने दोस्त के घर छिपा था। पुलिस ने छात्र से पूछताछ कर पूरी घटना की जानकारी जुटाई। पिता से रुपये लेने के लिए उसने खुद के अपहरण की साजिश रची थी। पुलिस ने पूछताछ के बाद बेटे को पिता के सुपुर्द कर दिया। साजिश का पता चलते ही पिता ने बेटे को जड़े थप्पड़ व्यापारी के तीन बच्चे हैं, दो बेटियां और एक बेटा। बेटे की साजिश रचे जाने की जानकारी मिलने पर पिता ने गुस्से में उसे थप्पड़ मारे। पूछताछ में छात्र ने बताया कि दिल्ली में रहने वाली उसकी एक महिला मित्र के जरिये उसने एआई वाली आंख फूटने जैसी तस्वीर तैयार कराई थी।

लोगों को समाज सुधार का पाठ पढ़ाकर खुद अपराध कर रहा था साधु, मंदिर में आखिर क्यों बनवा रहा था सीक्रेट रूम

बागपत दोहरे हत्याकांड में बड़ा खुलासा फरार महंत की तलाश तेज



बागपत, संवाददाता। सिंगौली तगा से 25 जुलाई से लापता दो दोस्तों के शव लहचौड़ा के गणेश मंदिर परिसर में गड्ढे से बरामद होने के बाद सनसनी फैल गई। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे हैं। मंदिर का महंत नरेश नाथ फरार है, जबकि उसके दो शिष्यों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। बागपत। सिंगौली तगा गांव से लापता दो युवकों की हत्या कर शव लहचौड़ा के गणेश मंदिर परिसर में दफन किए जाने का मामला सामने आया है। 13 अगस्त की रात करीब तीन बजे पुलिस ने मंदिर परिसर में खुदाई कर दोनों शव बरामद किए। मृतकों की पहचान 28 वर्षीय इसरार पुत्र रिडकू और 28 वर्षीय दिव्यांग अंकित पुत्र मुकेश के रूप में हुई है। घटना के बाद गांव में शोक और क्षेत्र में सनसनी का माहौल है।

25 जुलाई को बाइक से निकले थे दोनों दोस्त

सिंगौली तगा निवासी इसरार और अंकित दोस्त थे। परिजनों के अनुसार, दोनों 25 जुलाई को बाइक से घूमने के लिए घर से निकले थे, लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटे। परिजनों ने उनकी तलाश की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद 27 जुलाई को चांदीनगर थाने में दोनों की गुमशुदगी दर्ज कराई गई। पुलिस तभी से दोनों की तलाश में जुटी थी।

महंत से पूछताछ करनी चाही तो हो गया फरार

पुलिस को जांच के दौरान लहचौड़ा के गणेश मंदिर से जुड़े कुछ सुराग मिले। मंदिर रटौल मार्ग पर स्थित है। पुलिस ने वहां के महंत नरेश नाथ से पूछताछ करने का प्रयास किया, लेकिन वह फरार

मिला। इसके बाद पुलिस ने शक के आधार पर उसके दो शिष्यों को हिरासत में लिया। पूछताछ के बाद पुलिस ने मंदिर परिसर में खुदाई कराई, जहां गड्ढे में दबे दोनों युवकों के शव बरामद हुए। मंदिर में पिछले कुछ समय से बनवा रहा था गुप्त कमरा पुलिस जांच में सामने आया है कि महंत नरेश नाथ उत्तराखंड के काशीपुर का रहने वाला है और करीब एक साल से मंदिर में रह रहा था। ग्रामीणों के अनुसार, साधु रोजाना लोगों को प्रवचन देता था और अपराध से दूर रहने तथा शांतिपूर्ण जीवन जीने की सीख देता था। इसी दौरान वह मंदिर परिसर में एक गुप्त कमरा भी बनवा रहा था। ग्रामीणों ने इस निर्माण का विरोध भी किया था। अब दो युवकों के शव मंदिर परिसर में मिलने के बाद इस गुप्त कमरे को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं।

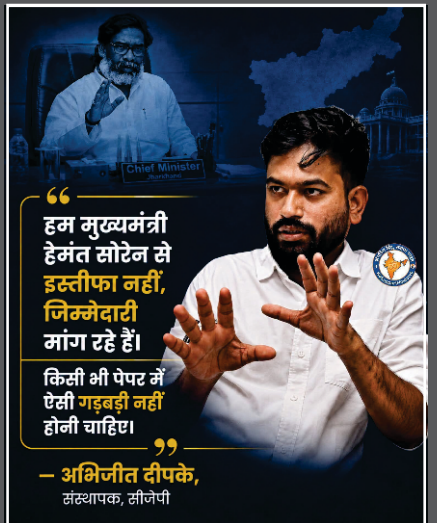


‘सवाल पूछते हैं जवाब नहीं सुनते’ संसद में हो रहे विरोध पर कंगना का राहुल पर हमला

नई दिल्ली, एजेंसी। कंगना रनौत ने संसद में विपक्ष के हंगामे और राहुल गांधी के रवैये की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष सरकार से जवाब मांगता है, लेकिन चर्चा नहीं होने देता। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है। भाजपा सांसद कंगना रनौत ने गुरुवार को संसद में विपक्ष के लगातार विरोध-प्रदर्शन की आलोचना की। उन्होंने विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर आरोप लगाया कि वे सरकार से जवाब तो मांगते हैं, लेकिन साथ ही चर्चा होने भी नहीं देते।

कंगना ने क्या कहा?

रनौत ने कहा, यह बेहद आपत्तिजनक है। उन्होंने यहां का माहौल पूरी तरह से खराब कर दिया है। हालात दिन-ब-दिन बिगड़ते जा रहे हैं। छात्रों के विरोध-प्रदर्शन और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बयान की मांग को लेकर सरकार और विपक्ष के बीच जारी गतिरोध के बीच उनकी ये टिप्पणी आई है। विपक्ष दिल्ली में विरोध कर रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई को लेकर सरकार से जवाब मांग रहा है। वहीं, सरकार का कहना है कि इस मामले पर संसद में चर्चा हो सकती है। बुधवार को संसदीय कार्य मंत्री किरन रिजिजू ने कहा कि अमित शाह छात्र विरोध-प्रदर्शन पर चर्चा में भाग लेने और विपक्ष द्वारा उठाए गए मुद्दों का जवाब देने के लिए तैयार हैं।



गोरखपुर में डाक्टर ने 8वीं मंजिल से कूदकर दी जान

पशु चिकित्सक डा. परमात्मा सिंह ने 1.40 करोड़ रुपये की ठगी के सदमे में अपार्टमेंट की आठवीं मंजिल से कूदकर जान दे दी।

संवाददाता, गोरखपुर। गोरखनाथ क्षेत्र के बसंत इक्लेव अपार्टमेंट की आठवीं मंजिल से गुरुवार सुबह पशु चिकित्सक डा. परमात्मा सिंह ने कूदकर जान दे दी। परिजन उन्हें खून से लथपथ हालत में पास के निजी अस्पताल ले गए, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट मिला है, जिसमें जेल भेजी गई जालसाजी की आरोपित गरिमा सिंह का नाम लिखा है। डा. परमात्मा सिंह ने आठ दिन पहले एम्स थाने में गरिमा और गिरोह के विरुद्ध 1.40 करोड़ रुपये की ठगी करने का मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार, डा. परमात्मा सिंह मूल रूप से मऊ के मोहम्मदाबाद क्षेत्र के बरबोझी के रहने वाले थे और वर्तमान में गोरखनाथ के बसंत इक्लेव के बी-213 ब्लॉक में परिवार के साथ रह रहे थे। वह पेशे से पशु चिकित्सक थे और वर्तमान में महाराजगंज जिले के एक ब्लॉक में तैनात थे। डा. परमात्मा सिंह ने पांच अगस्त को एम्स थाने में गरिमा और उसके गिरोह के विरुद्ध 1.40 करोड़ रुपये की ठगी का मुकदमा दर्ज कराया था। आरोपितों में गरिमा के अलावा उसके सेवानिवृत्त रेलकर्मि पिता और शिक्षक पति समेत अन्य लोग शामिल हैं। पुलिस इस मामले में गरिमा और उसके पिता को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। इस गिरोह के विरुद्ध अब तक एम्स थाने में तीन और सहजनवा थाने में एक मुकदमा दर्ज है। पुलिस छह मामलों की जांच कर रही है। सीओ गोरखनाथ रवि कुमार सिंह ने बताया कि गुरुवार सुबह करीब 9:40 बजे डायल 112 पर सूचना मिली कि डा. परमात्मा सिंह ने अपार्टमेंट की आठवीं मंजिल से छलांग लगा दी है। कमरे की तलाशी लेने पर सुसाइड नोट मिला है। उसमें



गरिमा का नाम लिखा है। पुलिस सुसाइड नोट और ठगी के मुकदमे से जुड़े तथ्यों को भी जांच में शामिल कर रही है।

पत्नी भी हैं पशु चिकित्सक

डा. परमात्मा सिंह की पत्नी सावित्री सिंह भी पशु चिकित्सक हैं। दंपती अपने दो बच्चों, एक बेटा और एक बेटी के साथ बसंत इक्लेव में रहते थे। घटना की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल है। गोरखनाथ थाना प्रभारी के अनुसार, सुसाइड नोट, ठगी के मुकदमे और घटना से जुड़े अन्य पहलुओं की जांच की जा रही है।

डॉ. परमात्मा सिंह बसंत इक्लेव के ब्लॉक बी स्थित फ्लैट में परिवार के साथ रहते थे। उनकी पत्नी सावित्री सिंह भी पशु चिकित्सक हैं। उनके एक बेटा और एक बेटी हैं। घटना के बाद पत्नी और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। परमात्मा सिंह वर्तमान में महाराजगंज जिले के एक ब्लॉक में पशु चिकित्सक के पद पर तैनात थे। पुलिस के अनुसार, डॉ. परमात्मा सिंह एम्स थाने में दर्ज 1.40 करोड़ रुपये की ठगी के प्राथमिकी के वादी थे। उन्होंने पांच अगस्त को एक पीएचडी महिला, उसके अधिकारी पिता, शिक्षक पति समेत गिरोह के अन्य सदस्यों के खिलाफ ठगी का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज कराई थी। पुलिस महिला आरोपी और उसके पिता को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है।

महाकुंभ में ड्यूटी करने वाले पुलिसकर्मियों को मिलेगी 10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि

लखनऊ, संवाददाता। महाकुंभ 2025 के सफल और अभूतपूर्व आयोजन में ड्यूटी करने वाले पुलिसकर्मियों को योगी सरकार 10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान करेगी। आयोजन में 65 करोड़ लोगों से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया था। यूपी के प्रयागराज में जनवरी-फरवरी में आयोजित महाकुंभ 2025 को सफल बनाने के लिए यूपी सरकार पुलिसकर्मियों को 10 हजार रुपये प्रोत्साहन राशि प्रदान करेगी। इस संबंध में आदेश जारी कर दिया गया है। दावा किया गया था कि 45 दिनों तक चले महाकुंभ में 65 करोड़ लोगों ने स्नान किया था। आयोजन की समाप्ति को लेकर तत्कालीन डीजीपी प्रशांत कुमार ने कहा था कि 45 दिनों में प्रयागराज में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने

**महाकुंभ
पुलिसकर्मियों को
10 हजार रुपये
प्रोत्साहन राशि
देगी योगी सरकार**



पवित्र स्नान किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशानुसार, हमने भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा और तकनीकी दृष्टि से एक अभूतपूर्व मॉडल प्रस्तुत किया। हमने भीड़ नियंत्रण और निगरानी के लिए

विश्वस्तरीय तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया है। सभी एजेंसियों के सहयोग से हम अभूतपूर्व प्रदर्शन करने में सफल रहे। महाकुंभ बिना किसी बड़ी त्रासदी के संपन्न हुआ। हमने रेलवे के साथ तालमेल बनाकर काम किया। स्नान के दिनों में 5 लाख से अधिक लोगों ने रेल सेवाओं का उपयोग किया जबकि अन्य दिनों में यह संख्या 3-4 लाख रही। आयोजन को सफल बनाने के लिए प्रदेश सरकार ने महाकुंभ में ड्यूटी करने वाले पुलिसकर्मियों को 10 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि देने का एलान किया था। इस संबंध में भुगतान करने के लिए अब आदेश जारी कर दिए गए हैं।



शूटिंग के बीच अचानक हुआ हादसा...

शहनाज़ गिल ने गलती से निगल ली नाक की नथनी!



सेट पर मच गई अफरा-तफरी!

अनुपमा परमेश्वरन ने किया चौंकाने वाला खुलासा

अनुपमा परमेश्वरन ने बताया कि उनके इंस्टाग्राम पोस्ट में दो साल तक चले एक रिश्ते में हुए दुर्व्यवहार का जिक्र है।



अनुपमा ने बताई ब्रेक की वजह

एंटरटेनमेंट डेस्क। अनुपमा परमेश्वरन की पुरानी पोस्ट के बाद फैंस के बीच उनके व्यक्तिगत रिश्तों में तनाव होने की खबरें चल रही थीं। इस पर अब एक्ट्रेस खुलकर सामने आई हैं। बीते दिनों अनुपमा परमेश्वरन ने सोशल मीडिया पर अपने रिश्ते को लेकर पोस्ट किया था। इससे फैंस को उनके ब्रेकअप का अंदाजा हो गया था। एक इंटरव्यू के दौरान आई एम धान्या वर्मा नाम के शो में उन्होंने अपने रिश्तों पर बात की।

क्या बोलीं अनुपमा परमेश्वरन?

अनुपमा परमेश्वरन ने बताया कि उनके इंस्टाग्राम पोस्ट में दो साल तक चले एक रिश्ते में हुए दुर्व्यवहार का जिक्र है। उन्होंने इस बारे में तभी बात की जब उन्हें लगा कि वह अब इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं। अनुपमा ने कहा...मैंने पिछले दो साल एक ऐसे व्यक्ति के साथ बिताए जो कि आत्ममुग्ध था। सिर्फ अपनी परवाह करता था। मैंने यह पोस्ट तब शेयर किया जब मैं उस रिश्ते से बाहर आ गई। और अपने अनुभव के बारे में बात करने के लिए तैयार महसूस कर

रही हूं।

इस उत्पीड़न के कई स्टेज होते हैं

अपनी बातचीत में आगे अनुपमा परमेश्वरन ने कहा, 'पहली श्रेणी में वे लोग आते हैं जो पीड़ित लोगों को जानते हैं, यानी वे परिवार और मित्र जिन्होंने किसी को पीड़ित होते देखा है। दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्हें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने यह शब्द सुना तो होगा, लेकिन इसके बारे में किसी तरह की कोई खोजबीन नहीं की होगी। तीसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जो इसे जेंडर-आधारित बताते हैं और अनुमानों के आधार पर निगेटिव टिप्पणियां करते हैं। अगली श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनसे मैं बात करना चाहती हूँ, वे लोग जो इस स्थिति से गुजर चुके हैं लेकिन अभी तक इसे पहचान नहीं पाए हैं।' यही सबसे ज्यादा खतरनाक है।

रिजेक्ट किए जाने का दुख कैसे बर्दाश्त करती हैं विधात्री बंदी

एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री विधात्री बंदी ने बताया है कि जब किसी प्रोजेक्ट में उन्हें रिजेक्ट करके किसी सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर को लिया जाता है तो उन्हें कैसा लगता है। अभिनेत्री विधात्री बंदी के लिए, पहचान मिलना और काम मिलना हमेशा एक जैसी बात नहीं रही। हाल ही में उन्होंने श्मैक्स, मिन एंड म्याओजाकी में लीड रोल निभाया। इससे पहले उन्होंने शिदत में सपोर्टिंग रोल किया। उसके बाद जलसा और द डिप्लोमैट में काम किया। हाल ही में बंदी ने बताया कि रोल पाना कितना मुश्किल हो सकता है, खासकर सोशल मीडिया के दौर में।

विद्या बालन और नसीरुद्दीन के साथ किया काम

इंडिया टुडे से बातचीत में एक्ट्रेस ने बताया उनके करियर के सबसे बड़े सबक उन एक्टर्स से मिले हैं, जो पहले से ही अपने काम में टॉप पर हैं। बंदी ने विद्या बालन, शेफाली शाह और जॉन अब्राहम के साथ काम किया है।

हाल ही में उन्हें आदिल हुसैन, नसीरुद्दीन शाह और नफीसा अली जैसे दिग्गजों के साथ काम करने का मौका मिला।

उम्मीद के मुताबिक प्रोजेक्ट्स नहीं मिले

धात्री बंदी शजलसाह से ही अपनी छाप छोड़ दी थी, जहां उन्होंने विद्या बालन और शेफाली शाह के साथ बेहतरीन काम किया था। लेकिन उसके बाद उन्हें वैसी लगातार मौकों नहीं मिले जैसी उन्होंने उम्मीद की थी। इंडस्ट्री की रफ्तार धीमी हो गई, प्रोजेक्ट्स रोक दिए गए।

बिना चुने काम किया

उन्होंने कहा, मैं सच कहूँ तो शजलसाह के बाद मुझे बहुत उम्मीदें थीं। मुझे लगा कि मुझे और काम करने को मिलेगा, मगर फिर इंडस्ट्री धीमी हो गई। उन्होंने यह भी कहा कि इसका मतलब यह भी था कि उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि ऐसे दौर भी आएंगे जब उन्हें बस काम करते रहना होगा। एक्ट्रेस के मुताबिक एक समय ऐसा आया जब मैं बहुत ज्यादा चुन-बीन नहीं कर सकती थी। मुझे कुछ न कुछ करना था। मुझे काम करते रहना था। मैं बस गायब नहीं हो सकती थी।

एंटरटेनमेंट डेस्क। निकिता रावल का वीडियो वायरल होने के बाद कई फैंस ने उनका सपोर्ट किया है। इस पर अभिनेत्री ने प्रतिक्रिया दी है। आइए जानते हैं पूरा मामला। आठ अगस्त को अभिनेत्री निकिता रावल उस वक्त चर्चा में आ गईं, जब रेड कार्पेट पर एक महिला फैन ने अचानक उनके होंठों पर चूम लिया। इससे एक्ट्रेस हैरान और असहज हो गईं। यह घटना वीडियो में कैद हो गई और सोशल मीडिया पर वायरल हो गई, जिससे यूजर्स के बीच इस पर खूब चर्चा होने लगी।

वायरल वीडियो पर निकिता की प्रतिक्रिया

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के कुछ दिनों बाद, 12 अगस्त को निकिता ने इस घटना पर प्रतिक्रिया दी। एक्ट्रेस ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर देश भर के फैंस से मिले सपोर्ट वाले मैसेज के स्क्रीनशॉट शेयर किए। कई लोगों ने निकिता के प्रति अपना समर्थन जताया और घटना के बाद उन्हें प्यार भेजा।

निकिता ने फैन का अदा किया शुक्रिया

मैसेज का जवाब देते हुए, निकिता ने विवाद के दौरान साथ देने के लिए अपने फैंस का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने लिखा, इतने प्यार और सपोर्ट के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं इसकी तारीफ करती हूँ। आप जानते हैं कि मैं सही हूँ, मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है। मैं हमेशा सच के साथ खड़ी रहूंगी। एक फैन ने निकिता के सपोर्ट में लिखा कि वह उस महिला फैन को सजा देते। इस पर निकिता ने बस इतना कहा, 'आपके सपोर्ट के लिए धन्यवाद।'

फैन ने किया था जबरन किस

वीडियो वायरल होने पर निकिता ने दी प्रतिक्रिया, कहा— मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं



स्पोर्ट्स डेस्क। महिला टेनिस खिलाड़ियों के लिए एसआरवाई जीन टेस्ट अनिवार्य करने के डब्ल्यूटीए के फैसले पर विवाद शुरू हो गया है। कुछ खिलाड़ियों ने इसे प्रतियोगिता में निष्पक्षता के लिए जरूरी बताया, जबकि स्पोर्ट्स एंड राइट्स एलायंस ने इसे भेदभावपूर्ण और नुकसान पहुंचाने वाला कदम बताया। आर्यना सबालेंका ने फैसले का समर्थन किया है, जबकि कोको गॉफ ने चिंता जताई है। महिला टेनिस में प्रतिस्पर्धा को लेकर बड़ा बदलाव होने जा रहा है। महिला टेनिस संघ (WTA) ने महिला खिलाड़ियों के लिए एक बार 'जीन टेस्ट' कराने की नीति पेश की है। इसके तहत महिला खिलाड़ियों की आनुवंशिक जांच की जाएगी और डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट में खेलने के लिए यह टेस्ट पास करना अनिवार्य होगा। रिपोर्ट के मुताबिक, यह जांच गाल के अंदर से लिए गए स्वेब या ब्लड सैंपल के जरिए की जा सकती है। डब्ल्यूटीए का यह कदम खेल में जैविक पहचान से जुड़े विवादों और प्रतिस्पर्धा की निष्पक्षता के सवाल के बीच आया है। हालांकि, इस फैसले को लेकर खेल जगत की राय बंटी हुई है। कुछ लोग इसे महिला प्रतियोगिताओं में निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए जरूरी कदम मान रहे हैं, जबकि आलोचकों का कहना है कि खिलाड़ियों की इस तरह जांच करना कलंक और मानसिक परेशानी का कारण बन सकता है।

महिलाओं को इससे नुकसान हो सकता है
स्पोर्ट्स एंड राइट्स एलायंस ने डब्ल्यूटीए से अपनी नीति पर दोबारा विचार करने की अपील की है। संगठन की कार्यकारी निदेशक एंड्रिया फ्लोरेंस ने

जेंडर टेस्टिंग को लेकर गंभीर चिंता जताई। फ्लोरेंस ने कहा, डब्ल्यूटीए यह दावा कर सकता है कि उसका इरादा नुकसान पहुंचाने का नहीं है, लेकिन अच्छे इरादे भी उस कलंक और मानसिक आघात को कभी खत्म नहीं कर सकते, जिसका सामना महिलाओं और लड़कियों को जेंडर टेस्टिंग के कारण करना पड़ेगा। आलोचकों का तर्क है कि ऐसी जांच महिला खिलाड़ियों को अनावश्यक जांच और सार्वजनिक चर्चा के दायरे में ला सकती है। इसी वजह से नीति को भेदभावपूर्ण और अनावश्यक बताया जा रहा है।

सबालेंका ने किया फैसले का समर्थन
दुनिया की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी आर्यना सबालेंका ने डब्ल्यूटीए के फैसले का समर्थन किया है। कनाडियन ओपन के दौरान उन्होंने कहा कि महिला टेनिस में निष्पक्षता बनाए रखना जरूरी है। सबालेंका ने कहा, शुरुआत में हमारे टूर में निष्पक्षता बनाए रखना वास्तव में महत्वपूर्ण है। जैविक रूप से पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक मजबूत होते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि किसी जैविक पुरुष के लिए महिलाओं के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करना महिलाओं के लिए उचित नहीं होगा। उन्होंने आगे कहा, श्रेय मानना है कि इस फैसले तक पहुंचने में उन्हें थोड़ा समय लगा और मैं इसका समर्थन करती हूँ। मैं अपने ऊपर और अपने लक्ष्यों पर ध्यान दे रही हूँ। अगर वे हम सभी का टेस्ट करना चाहते हैं तो मुझे खुशी है कि मैं यह कराऊंगी। यह उचित है और हमें इसे इसी तरह बनाए रखना चाहिए।



इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर एंड्रयू फिल्टॉफ के 18 साल के बेटे रॉकी फिल्टॉफ ने मंगलवार को समरसेट के खिलाफ अपनी बल्लेबाजी से जमकर सुर्खियां बटोरीं। फिल्टॉफ ने जिस अंदाज में बल्लेबाजी की, वह उनके पिता एंड्रयू की याद दिलाने वाला था। समरसेट ने टॉस जीतकर लंकाशायर को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया, लेकिन यह फैसला उसके लिए भारी पड़ गया। लंकाशायर ने 50 ओवर में 6 विकेट पर 443 रन ठोक दिए।

क्या गाल टेस्ट के तीसरे दिन भी बारिश बनेगी विलेन

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत ने बारिश से प्रभावित दूसरे दिन 460/9 का मजबूत स्कोर बनाकर श्रीलंका पर दबाव बनाए रखा। गॉल में तीसरे दिन भी बारिश की 83 प्रतिशत संभावना है, जिससे मुकाबला एक बार फिर रुक-रुककर चल सकता है। भारत और श्रीलंका के बीच गॉल इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जा रहे पहले टेस्ट के तीसरे दिन भी बारिश खलल डाल सकती है। दूसरे दिन बारिश के कारण एक सत्र से अधिक का खेल प्रभावित हुआ था। इसके बावजूद भारत ने दिन का खेल नौ विकेट पर 460 रन के मजबूत स्कोर के साथ समाप्त किया। भारत की ओर से कुलदीप यादव 12 रन और प्रसिद्ध कृष्णा 1 रन बनाकर नाबाद लौटे। अब सबकी नजर इस बात पर है कि भारतीय टीम अपनी पारी घोषित करती है या बल्लेबाजी जारी रखती है।

दूसरे दिन सिर्फ 43 ओवर का खेल
गॉल में लगातार बारिश के कारण तीसरे दिन का खेल भी प्रभावित होने की आशंका है। दूसरे दिन बारिश के चलते शुरुआत में देरी हुई और लंच भी समय से पहले लेना पड़ा। खेल भारतीय समयानुसार दोपहर 2:35 बजे पर शुरू हो सका और पूरे दिन केवल 43 ओवर ही फेंके जा सके। भारत ने अपने पहले दिन के 288/2 के स्कोर में 172 रन और जोड़े। टीम ने दिन का अंत 460/9 के स्कोर पर किया।

गॉल में सोमवार को बारिश की ज्यादा संभावना
एक्यूवेटर के पूर्वानुमान के मुताबिक, सोमवार को गॉल में बारिश की 83 प्रतिशत संभावना है। घंटे के हिसाब से भी बारिश का खतरा लगातार बना हुआ है। सुबह 10 बजे बारिश की संभावना 51 प्रतिशत, 11 बजे 47 प्रतिशत और दोपहर 12 बजे 44 प्रतिशत बताई गई है।



दोपहर 1 बजे यह 48 प्रतिशत और 2 बजे 52 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। इसके बाद 3 बजे 45 प्रतिशत, 4 बजे 39 प्रतिशत और 5 बजे 34 प्रतिशत संभावना है। शाम छह बजे फिर बारिश की संभावना 40 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में तीसरे दिन भी मुकाबला रुक-रुककर शुरू होने और बारिश के कारण बार-बार रुकने की स्थिति में रह सकता है।

श्रीलंका के गेंदबाजों ने की वापसी
श्रीलंका की ओर से डेब्यू कर रहे ऑफ स्पिनर केशारा नुवांथा ने तीन विकेट लेकर प्रभावित किया। वहीं बाएं हाथ के स्पिनर प्रभात जयसूर्या ने 109 रन देकर चार विकेट हासिल किए। दूसरी नई गेंद मिलने के बाद श्रीलंकाई गेंदबाजों को कुछ अहम सफलताएं मिलीं, लेकिन इसके बावजूद भारत ने दिन का खेल पूरी तरह अपने पक्ष में रखा। अब तीसरे दिन बारिश अगर मुकाबले को ज्यादा प्रभावित नहीं करती है, तो भारत के पास श्रीलंका पर दबाव बढ़ाने और टेस्ट में निर्णायक बढ़त हासिल करने का सुनहरा मौका होगा।



देवदत्त पडिक्कल ने श्रीलंका के खिलाफ अपना पहला टेस्ट शतक जड़ने के बाद कहा कि स्पिन के खिलाफ स्पष्ट रणनीति और बड़ी पारी की भूख उनकी सफलता की कुंजी रही। उन्होंने बताया कि शतक के बाद शुरुआती 20-30 गेंदों पर एकाग्रता बनाए रखना बेहद अहम था और दो साल की मेहनत के बाद यह उपलब्धि हासिल कर वह बेहद खुश हैं।

दी नैक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक
बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन
ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा
हुसैनिया बिल्डिंग बकसीपुर
गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी
गंगा टोला, निकट जानकी
बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर
पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित।
पिन:- 273003

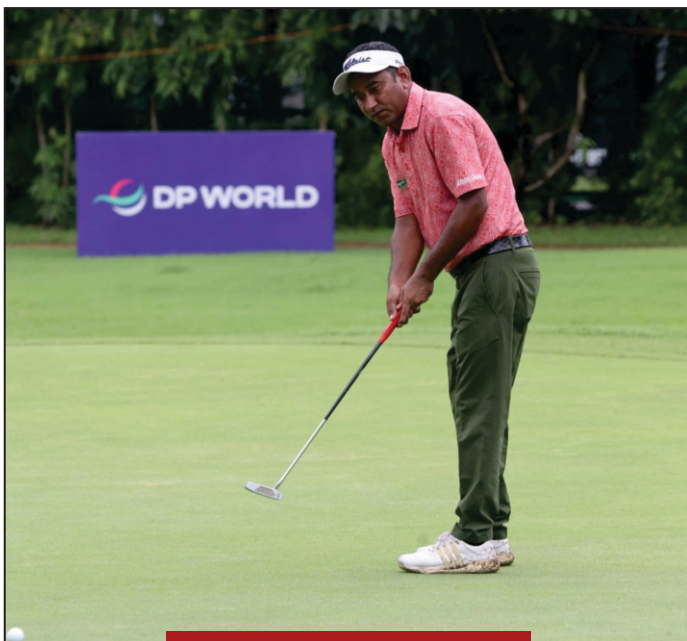
UPHIN/2023/90814

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148, 9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोट:- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।



बारिश से कोल इंडिया ओपन 54 होल तक सीमित, जमाल हुसैन दो शॉट आगे

